४ - संयोग से अथवा योजना से?

1

जीवन के रहस्यों की खोज

2

मान लीजिए कि आप समुद्र के किनारे रहते हैं। एक सुबह आप जल्दी उठ कर समुद्र के रेतीले किनारे पर चलने का विचार करते हैं।

यह एक अत्यन्त ही भव्य दृश्य है। उगते हुए सूर्य की किरणें जल पर नृत्य कर रही हैं।

समुद्र की लहरें तट पर आकर टकरा रही हैं।

3

और जब आप समुद्र के किनारे चुपचाप चल रहें हैं तब आप अपने समक्ष रेत पर बने हुए एक जोड़े पदचिन्हों की ओर ध्यान देते हैं।

फिर आप दूसरे और तीसरे जोड़े पदचिन्हों को देखते हैं। जितनी दूर तक आप की नजर जाती है उतने दूर तक आप को तट पर कोई भी दिखाई नहीं देता है।

ये सारे पदचिन्ह आप को क्या बताते हैं? ये साधारण रुप से यह कहते हैं-- यद्यपि आप किसी को नहीं देख सके, फिर भी आपसे पहले कोई इस तट पर चल कर गया है।

मैं आप से एक अन्य प्रश्न करता हूँ:

४ - संयोग से अथवा योजना से?

4

यदि आप द्वार के बाहर खड़े होकर चारों ओर देखते हैं, तो आप को क्या दिखाई देता है?

घास, पेड़, पहाड़ियाँ, फूल, झरने, झील का पानी, या फिर जानवर।

5

और जब आप वहाँ पर खड़े हैं, तब आप किस पर खड़े है?

जी हाँ, आप पृथ्वी के उपर धरती पर खड़े हैं।

6

ऊपर देखिए, और आप को क्या दिखाई देता है?

7

दिन के समय, आप को या तो सूर्य, आकाश, या फिर बादल दिखाई देगें।

8

रात के समय, आप को या तो हज़ारों तारागण दिखाई देंगे- या फिर चन्द्रमा।

9

यह सब यहाँ कैसे आया?

आप यहाँ तक कैसे पहुँचे?

आप को किसने बनाया?

४ - संयोग से अथवा योजना से?

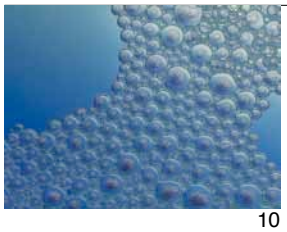
10

कुछ लोग यह कहते हैं कि जीवन का आरम्भ सिर्फ समुद्र की साधारण कोषिकाओं से हुआ है। वे कोष जो कि विभिन्न कोषिकाओं से बने थे, छोटे- छोटे जीवित प्राणी बन गए।

फिर वे छोटे जीवित तत्व लाखों वर्षो के उपरान्त छोटे प्राणियों में बदल गए जो कि समुद्र से धरती पर चल सकते थे। यहाँ पर उनके पैर बढ़ने लगे।

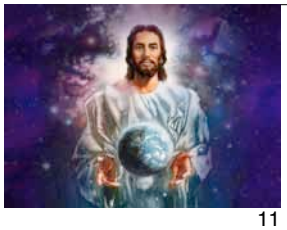
11

किन्तु लाखों लोग बहुत समय से विश्व, पृथ्वी और सम्पूर्ण जीवित जगत की उत्पति के विषय एकदम अलग ही विश्वास रखते हैं। वे विश्वास करते हैं कि एक सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने इन सब की रचना की। परन्तु किस परमेश्वर ने?

12

लोग विभिन्न ईश्वरों की उपासना करते हैंः जैसे- बुद्ध, मोहम्मद, शिन्तो, हिन्दुओं के ईश्वर और अन्य भगवान।

इन ईश्वरों के मानने वाले यह दावा करते हैं कि उनका ईश्वर सर्वोच्च है।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

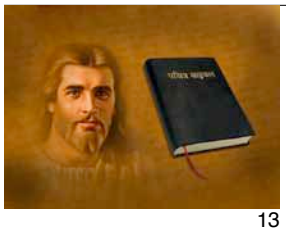

13

परन्तु क्या आप यह जानते हैं कि संसार के इन समस्त ईश्वरों में से केवल एक ही ने प्रत्येक वस्तु के सृष्टिकर्त्ता होने का दावा किया था?

और वह परमेश्वर पवित्र बाइबिल का परमेश्वर है। इसलिए हम बाइबिल से समस्त पृथ्वी के सृष्टिकर्ता के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

14

यदि आप एक मकान को देखते हैं तो क्या आप यह मान लेते हैं कि किसी प्रकार यह मकान अपने आप निर्मित हो गया?

नहीं। आप यह जानते हैं कि किसी ने उस मकान का निर्माण किया हैं।

15

यदि आप एक सड़क को देखते हैं, तो क्या आप यह सोचते हैं कि वह सड़क अपने आप बन गई - या कि उसे किसी ने बनाया है? और सड़कें और मकान को बनाना समस्त संसार और मनुष्यों को बनाने से सरल है। सो जब आप लोगों, जानवरों, और तारागणों को देखते हैं, तो क्या आप इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँचते है कि किसी ने इन सब को बनाया हैं?

किसी ने इन चीज़ों को आकार दिया हैं या योजना बना कर इनकी सृष्टि की है।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

16

अब हम उस परमेश्वर के विषय में सीखना आरम्भ करेंगे जिसने समस्त वस्तुओं की योजना बनाने और सृजन करने का दावा किया हैं। अब हम यह जानने की आरम्भ करते हैं कि समस्त विश्व और इस पृथ्वी को बनाने में उसका क्या कार्य हैं इस विषय में उसकी पुस्तक, बाईबिल क्या कहती हैं। सबसे पहले हम यह देखते हैं कि पहले दिन क्या हुआ था।

17

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : १)

"आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की ।"

उत्पत्ति १ : १

18

(मूलपाठ : उत्पत्ति १:३)

"तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो : तो उजियाला हो गया।"

उत्पत्ति १:३

19

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ४, ५)

"और परमेश्वर ने उजियाले को देखा, कि वह अच्छा है, और परमेश्वर ने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

20

"तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहिला दिन हो गया।"

उत्पत्ति १:५

सप्ताह के पहले दिन परमेश्वर ने इस पृथ्वी को बनाया। उसने उजियाला बनाया और इस प्रकार दिनों और रातों का कालचक्र आरंभ हुआ।

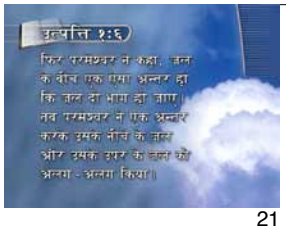

21

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ६) दूसरा दिन

"फिर परमश्वर ने कहा, "जल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए। एक अन्तर करके उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग अलग किया।"

उत्पत्ति १ : ६

22

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ७)

"---और वैसे ही हो गया।"

उत्पत्ति १ : ७

४ - संयोग से अथवा योजना से?

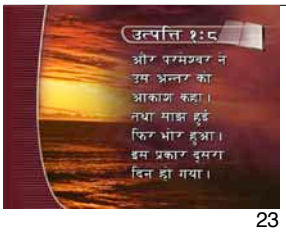

23

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ८)

"और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन हो गया।"

उत्पत्ति १ : ६

दूसरे दिन, परमेश्वर ने हमारे उपर आकाश को बनाया, और पृथ्वी के जल से आकाश और बादलों के जल को अलग किया।

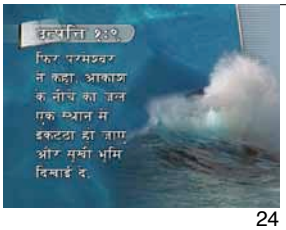

24

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ९) तीसरा दिन

"फिर परमेश्वर ने कहा, आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे,"

25

और वैसा ही हो गया

उत्पत्ति १ : ९

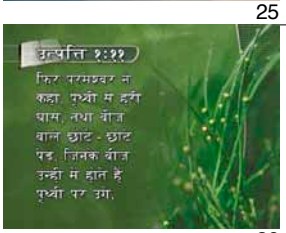

26

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ११)

"फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से हरी घास, तथा बीजवाले छोटे - छोटे पेड़, जिनके बीज उन्हीं में होते हैं पृथ्वी पर उगें,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

27

"और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक- एक की जाति के अनुसार होते हैं उगें : और वैसा ही हो गया।"

उत्पत्ति १ : ११

28

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : १३)

"तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन हो गया।"

उत्पत्ति १ : १३

तीसरे दिन परमेश्वर ने कहा, "दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश के अन्तर में ज्योतियाँ हों;

29

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : १४) चौथा दिन

"फिर परमेश्वर ने कहा, दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश के अन्तर में ज्योतियाँ हों;

30

और वे चिन्हों, और नियत समयों, और दिनों, और वर्षों के कारण हों;

31

और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में पृथ्वी पर प्रकाश देनेवाली भी ठहरें;

और वैसा ही हो गया।"

उत्पत्ति १ : १४, १५

४ - संयोग से अथवा योजना से?

32

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : १८, १९)

"और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।"

33

"तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ।

इस प्रकार चौथा दिन हो गया।"

उत्पत्ति १ : १९

चौथे दिन परमेश्वर ने आकाश में सूर्य, चन्द्रमा और तारागण को भी बनाया।

34

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : २०) पाँचवा दिन

पाँचवे दिन परमेश्वर ने क्या बनाया ?

"फिर परमेश्वर ने कहा, "जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए,

35

और पक्षी पृथ्वी के उपर आकाश के अन्तर में उड़ें।"

उत्पत्ति १ : २०

36

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : २३)

तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पांचवां दिन हो गया।"

उत्पत्ति १ : २३

बाइबिल यह कहती है कि पाँचवे दिन परमेश्वर ने पक्षियों, मछलियों और समुद्र के जन्तुओं को बनाया।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

37

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : २४) छठवां दिन

सृष्टि का छठवां दिन अत्यन्त महत्वपूर्ण था:

"फिर परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी से एक - एक जाति के जीवित प्राणी उसके जाति के अनुसार उत्पन्न हों :

38

घरेलू पशु, और रेंगनेवाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु, जाति जाति के अनुसार उत्पन्न हों; और वैसा ही हो गया।"

उत्पत्ति १ : २४

39

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : २६, २७)

"फिर परमेश्वर ने कहा, " हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं;

40

और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं पर अधिकार रखें,

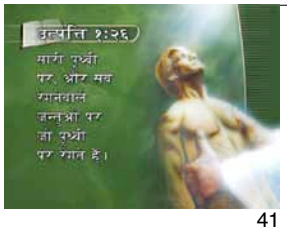

41

सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं।"

उत्पत्ति १ : २६

42

तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया; अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया;

४ - संयोग से अथवा योजना से?

43

नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की।"

44

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ३१)

"तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा हैं।

45

तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवां दिन हो गया।"

उत्पत्ति १ : ३१

छठवें दिन --जिस दिन परमेश्वर ने जानवरों को बनाया -- उस दिन उसने अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना की और मनुष्य को बनाया।

46

आदम और हव्वा यूं ही विकसित नहीं हुए या फिर स्वयं हो गए। बाईबिल यह कहती है कि परमेश्वर ने उनके शरीरों को अपने स्वरूप में आकार दिया।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

47

वह एक महान अभियंता है - एक महान बुद्धिमान आकृति देनेवाला --जिसने हमें जीवित प्राणी बनाया। सातवें दिन - सातवें दिन परमेश्वर की सृष्टि की रचना का कार्य समाप्त हुआ, इसलिए उसने विश्राम किया। और उसने उस सातवें दिन को सब्त का विश्राम दिन ठहराया।

48

(मूलपाठ : उत्पत्ति २ : १,२)
"यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया।

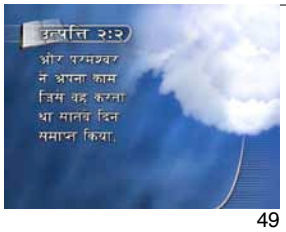

49

और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया,

50

और उसने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया।"
उत्पत्ति २ : १, २

४ - संयोग से अथवा योजना से?

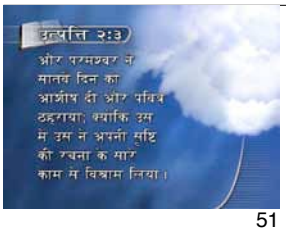

51

"और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उस में उस ने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया।"

हम सातवें दिन के सब्त के विश्राम दिन के विषय में, जिसे परमेश्वर ने बनाया, विस्तारपूर्वक बाद में बात करेंगें।

52

इस प्रकार संक्षेप में हमने यह देखा कि परमेश्वर ने कैसे इस पृथ्वी और जो कुछ इस में है, और मनुष्यों की भी सृष्टि की।

53

अब हम निकट से उस आश्चर्यजनक आकृति देने वाले और सृष्टिकर्त्ता को देखेंगे।

54

मनुष्य का शरीर हमें एक आकृति और आकृति देनेवाले का अनोखा प्रमाण देता हैं।

55

मनुष्य के एक अंग पर ही विचार करिए -- उसकी आँखें:

४ - संयोग से अथवा योजना से?

56

(दृश्य)

वैज्ञानिक हमें यह बतलाते हैं कि आँख की पुतली की कोमल आकृति और लैंस की तुलना में पृथ्वी के आधुनिकतम कैमरे एक बच्चे के खिलौने से लगते हैं।

57

आँख प्रकाश को संदेश में बदल देती है और मस्तिष्क उसे किस प्रकार से समझता है इसकी नकल पृथ्वी की सब से उन्नत प्रयोगशाला भी नहीं कर सकती।

मस्तिक की कोषिकाएँ इन संदेशों को आश्चर्यजनक दृष्टि में बदल देती हैं। इसके अतिरिक्त पृथ्वी पर इस प्रकार का कार्य कोई अन्य नहीं कर सकता।

58

मनुष्य की आँख प्यारे सृष्टिकर्त्ता की गवाही देती है जो यह चाहता है कि हम समस्त विश्व में उसके द्वारा बनाई गई सुन्दरता को देखें।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि भजनसंहिता का लेखक यह लिखता है:

59

(मूलपाठ : भजनसंहिता १३९: १४)

"मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं;

४ - संयोग से अथवा योजना से?

60

तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भांति जानता हूं।"

भजनसंहिता १३९ : १४

मनुष्य का शरीर और मस्तिष्क अत्यंत जटिल है और केवल एक अत्यंत बुद्धिमान आकृति देने वाला ही उसे आकृति दे सकता था।

61

परन्तु शेष विश्व के विषय में क्या कहना है? हमारे पास क्या प्रमाण है कि आकृति देने वाले परमेश्वर ने ही समस्त विश्व की सृष्टि की?

62

सुसमाचार देने वाला यशायाह हमें चुनौती देता है कि हम अपनी आंखें अपने चारों ओर होने वाली छोटी-छोटी बातों से हटाएँ और परमेश्वर ने आकाश में जो किया है उस ओर लगाएँ।

63

(मूलपाठ : यशायाह ४० : २६)

"अपनी आंखें ऊपर उठाकर देखो, किस ने इनको सिरजा? वह इन गणों को गिन गिनकर निकालता है;

64

वह उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और अत्यन्त बली है;

४ - संयोग से अथवा योजना से?

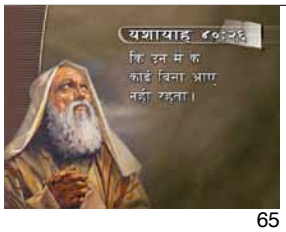

65

कि उन में के कोई बिना आए नहीं रहता।" यशायाह ४० : २६

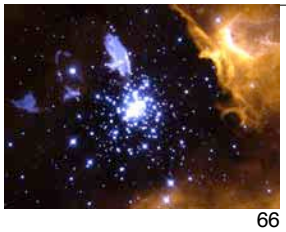
66

क्या आप ने कभी आँखे उठाकर आसमान में अनगिनित तारों को देखा है? कभी आपने यह सोचा है कि वे कहाँ से आए और इस बात से आपको आश्चर्य हुआ कि वे कितने हैं?

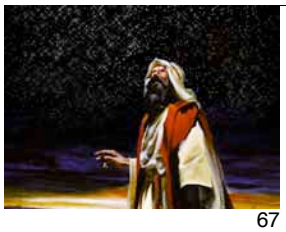
67

परमेश्वर ने हमें उसकी असीमितता को समझाने के लिए एक उदाहरण का प्रयोग किया।
एक बार वह अरब और यहूदी जाति के पिता इब्राहिम को बाहर ले गया और उसको यह चुनौती दी कि वह तारों को गिनकर बताए।

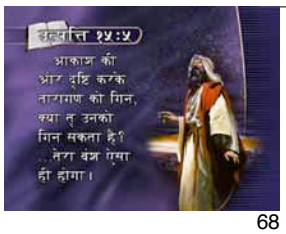

68

(मूलपाठ : उत्पत्ति १५ : ५)
"आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है? तेरा वंश ऐसा ही होगा।"
उत्पत्ति १५ : ५

४ - संयोग से अथवा योजना से?

69

हाल ही में नक्षत्रविद्या के ज्ञाता ने यह कहा है कि यदि आप संसार के समुद्री तट के रेत के कणों को गिन सकते है, तो आपको यह मालूम हो जायगा कि उन तारों की संख्या लगभग उतनी ही होगी जितनी की रेत के कणों की।

70

अगली बार जब आप समुद्री तट पर जाएँ, तो एक बाल्टी रेत को गिनने का प्रयत्न करें।
थोड़ा समय अवश्य लगाएं! इसी कारण राजा दाऊद ने कहा,

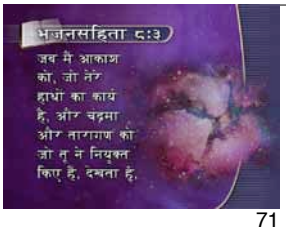

71

(मूलपाठ : भजनसंहिता ८ : ३,४)
"जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ,

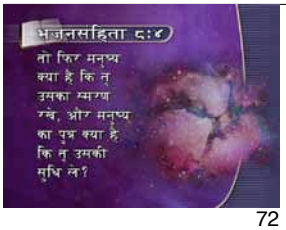

72

तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उसकी सुधि ले?"
भजनसंहिता ८ : ३,४

४ - संयोग से अथवा योजना से?

73

(दृश्य)

क्या आप ने कभी यह सोचा है कि एक सामर्थी परमेश्वर जो विशाल विश्व पर शासन और उसका पालन - पोषण करता है वह वास्तव में हमारी चिंता करता है और इस संसार में हमारी कठिनाईयों में हमारा साथ देता है?

यीशु ने यह कहा कि परमेश्वर की इच्छा के बिना एक गौरैया भी भूमि पर नहीं गिरती।

74

(मूलपाठ : मत्ती १० : ३१)

"इसलिए डरो नहीं, तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो।"

परमेश्वर के प्रेम और उसकी देखभाल करने पर जोर देने के लिए, यीशु ने कहा,

75

(मूलपाठः मत्ती १० : ३०)

"परन्तु तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं।"

मत्ती १० : ३०

कैसा परमेश्वर है!

४ - संयोग से अथवा योजना से?

76

बाइबिल के परमेश्वर के पास क्या अधिकार है कि वह प्रत्येक से यह दावा करता है कि उन्हें केवल उस की ही उपासना करनी चाहिए? बाइबिल का परमेश्वर और मसीहियत यह दावा करती है कि वह हमारी उपासना और भक्ति का अधिकारी है क्योंकि वह सृष्टिकर्त्ता - परमेश्वर है।

77

यदि वह है जो वह दावा करता है, और वह सृष्टिकर्त्ता है, तब वह हमारी उपासना का अधिकारी है। क्या आप इस बात से सहमत नहीं हैं?

78

यीशु के चेलों में से एक और बाइबिल की अंतिम पुस्तक प्रकाशितवाक्य का लेखक यूहन्ना, जब पटमुस नामक टापू में था तो उसे दर्शन मिला। उसे स्वर्गीय सिंहासन के कमरे का दृश्य दिखाया गया। ध्यान दिजिए कि उसने क्या देखा:

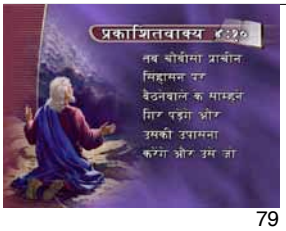

79

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य ४ : १०, ११)
"तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठनेवाले के साम्हने गिर पड़ेंगे और उसकी उपासना करेंगे और उसे जो

80

युगानुयुग जीवता है प्रणाम करेंगे; और अपने-अपने मुकुट सिंहासन के साम्हने यह कहते हुए डाल देंगे:

४ - संयोग से अथवा योजना से?

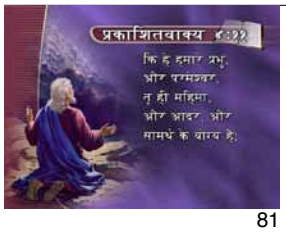

81

'कि हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है;

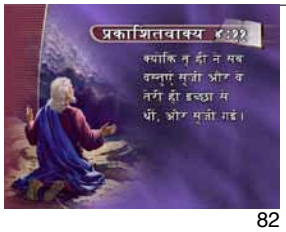

82

क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गई।"

प्रकाशितवाक्य ४ : १०, ११

83

ये प्राचीन परमेश्वर के सिंहासन के सामने उसकी महिमा और उपासना करते रहते हैं क्योंकि वह सृष्टिकर्त्ता है। यही एक कारण है कि हमें भी स्वर्गीय परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए।

84

केवल वही एक है जिसने संसार और हम सब को बनाया है। परन्तु, आप यह पूछ सकते हैं कि इसके अतिरिक्त हमारे पास और दूसरा क्या सबूत है कि परमेश्वर ही सृष्टिकर्त्ता है? परमेश्वर स्वयं हम से कहता है कि हमारे चारों ओर यह सबूत है कि वही हमारा सृजनहार है।

85

(मूलपाठ : रोमियों १ : २०)

"उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

86

यहां तक कि वे उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व।"

रोमियों १:२०

उत्पत्ति से ही, समस्त बनाई गई वस्तुओं में यह सबूत पाया जाता है कि परमेश्वर ही इनका बनानेवाला है।

87

रेत पर पास जाने वाले पदचिन्हों की तरह। हमें मालूम था कि वहाँ पर कोई था जबकि हमने उसे कभी नहीं देखा।

88

और जब आप अपने चारो ओर बनाई गई वस्तुओं को देखते है जिन्हें किसी ने तो बनाया है, वे वस्तुएँ उन पदचिन्हों की तरह हैं जो कि यह बताती हैं कि कोई तो अवश्य होगा जिसने इन्हें बनाया होगा।

89

परमेश्वर पिता, जैसा कि बाइबिल उसे पुकारती है, उसने अकेले ही इस सृष्टि को नहीं बनाया।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

90

(मूलपाठः उत्पत्ति १ : २६)

उत्पत्ति में यह कहा गया

"फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं ..."

यूहन्ना का सुसमाचार इसे और विस्तारपूर्वक बतलाता है।

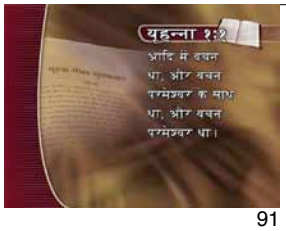

91

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : १ - ३)

"आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।"

92

यही आदि में परमेश्वर के साथ था।

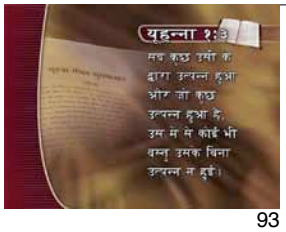

93

सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।"

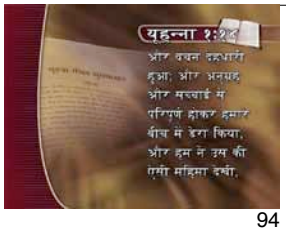

94

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : १४)

और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उस की ऐसी महिमा देखी,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

95

ऐसी महिमा जैसी पिता के एकलौते पुत्र की महिमा, अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण।"

यूहन्ना १ : १४

96

बाइबिल उस परमेश्वर के विषय में कहती है:

परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा।

परमेश्वरत्व अपने में तीन व्यक्तियों को समाविष्ट करता है, जो एक समान सोचते हैं, फिर भी वे अलग हैं।

97

यीशु ने पिता के साथ प्रत्येक वस्तु की सृष्टि में सहयोग दिया।

98

(मूलपाठ : इफिसियों ३ : ९)

"उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सबके सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था जिसने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा समस्त वस्तुओं का सृजन किया।"

प्रत्येक अच्छा और सिद्ध वरदान जो मनुष्य के पास है या कभी था या कभी होगा ये तब ही आया जब सृष्टिकर्त्ता ने मनुष्य जाति को सारी आशीषें दी।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

99

न केवल परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया और रहने के लिए सुन्दर विश्व दिया, परन्तु वह मनुष्य की आवश्यकताओं के लिए सजग है।

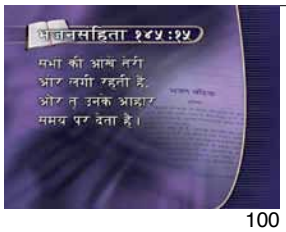

100

(मूलपाठः भजनसंहिता १४५ : १५, १६)
"सभों की आंखें तेरी ओर लगी रहती है, और तू उनके आहार समय पर देता है।

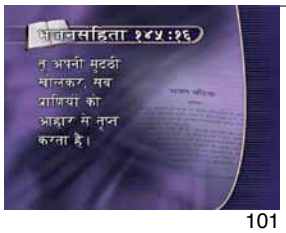

101

तू अपनी मुटठी खोलकर, सब प्राणियों को आहार से तृप्त करता है।"
भजनसंहिता १४५ : १५, १६

102

आइए अब हम देखते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर अपने बनाए गए प्राणियों की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है। जो पानी आप पीते हैं उसे लिजिए। वह पिरामिड्स से भी पुराना है - पहाड़ियों सा पुराना।

103

पानी रासायनिक पदार्थों या कूड़े करकट से प्रदूषित किया जा सकता है, परन्तु जब सूर्य उसे भाप बनाकर उड़ा देता है या उसे वायुमंडल के ऊपर ले जाता है,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

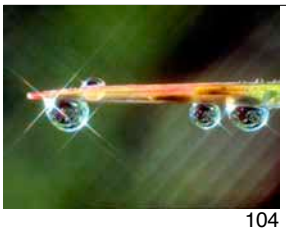
104

और तब वह फिर से शुद्ध और उपयोगी बन जाता है और फिर, वर्षा, ओस या बर्फ में विभाजित हो जाता है।

कितने अदभुत रूप से परमेश्वर ने पानी की प्रणाली को बनाया है!

105

और आकाश में परमेश्वर की महान शक्ति सूर्य के रूप में स्थिर यंत्र है!

एक क्षण के लिए सोचिए:

106

यदि यह सूर्य थोड़ा - सा बड़ा होता या पृथ्वी के थोड़े निकट होता, तो हमारे सागर उबल कर वाष्प बनकर उड़ गए होते।

107

यदि यह सूर्य थोड़ा- सा छोटा या थोड़ा- सा दूर होता तो हमारा वायुमंडल बर्फ बनकर जम जाता। या फिर पृथ्वी पर जीवन नहीं होता। परन्तु परमेश्वर ने केवल सारी वस्तुएँ ही नहीं सृजी बल्कि उनका पोषण भी करता है!

जो श्वास हम लेते हैं वह परमेश्वर का वरदान है:

बाइबिल यह कहती है,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

108

(मूलपाठ : अय्यूब १२ : १०)
"उसके हाथ में एक-एक जीवधारी का प्राण, और एक-एक देहधारी मनुष्य की आत्मा भी रहती है ?"
अय्यूब १२ : १०

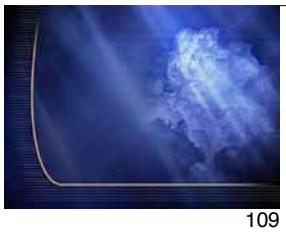
109

परमेश्वर ने विश्व का आकार बनाया और वह श्वास लेने की सही विधि जानता था जो पृथ्वी पर हमारे जीवन और स्वास्थ्य का पोषण करती है।

110

वह नाइट्रोजन की, ऑक्सीजन, आर्गन और कार्बन डायक्साइड की सही मात्रा जानता था जो वायुमंडल में घुलमिल सके।
नि:संदेह यह अपने - आप नहीं हो सकता था!

111

हमारी प्राकृतिक दुनिया में आश्चर्यों का कोई अन्त नहीं है - परमेश्वर का अपने प्राणियों की देखभाल का कोई अन्त नहीं है। पक्षियों के स्थानांतरित होने के विषय में सोचिए। प्रकृति का यह एक जटिल प्रश्न है।

112

कैसे एक पक्षी जिसका वजन एक आउंस से भी कम होता है वह हज़ारों मील समुद्री रास्ते से बिना रुके एक ऐसी मंज़िल तक जाता है जिसे उसने कभी नहीं देखा?

४ - संयोग से अथवा योजना से?

113

कैसे मछलियाँ झरनों की खोज करती हैं जहाँ उनके जीवन की शुरुआत हुई, बिना समुद्री नक्शे के वे कैसे १२०० मील पार करती हैं? उन्होंने यह कैसे सीखा कि उन्हें कब और कहाँ जाना है?

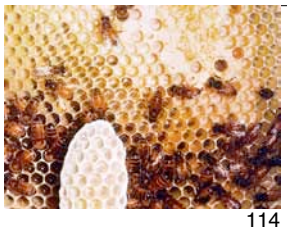

114

मधुमक्खी को मधु का छत्ता बनाना किसने सिखाया जो कि एक आश्चर्यजनक निर्माण कला है, और उनका मस्तिष्क पिन के सिरे के बराबर ही बड़ा है?
इसके पीछे किसका अदभुत मस्तिष्क है?
अय्यूब हमें बताता है:

115

(मूलपाठ : अय्यूब १२ : ७ - ९)
"पशुओं से तो पूछ और वे तुझे दिखाएंगे; और आकाश के पक्षियों से, और वे तुझे बता देंगे;

116

पृथ्वी पर ध्यान दें, तब उस से तुझे शिक्षा मिलेगी; और समुद्र की मछलियां भी तुझ से वर्णन करेंगी।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

117

कौन इन बातों को नहीं जानता, कि यहोवा ही ने अपने हाथ से इस संसार को बनाया है"

अय्यूब १२ : ७ - ९

हाँ, परमेश्वर ने ही यह सब किया है!

वास्तव में, परमेश्वर की उपासना करने के लिए हमारा कर्त्तव्य और मौका इस सत्य पर आधारित है कि वह हमारा सृष्टिकर्त्ता है और समस्त प्राणी अपने अस्तित्व के लिए उसके कर्जदार हैं।

118

(मूलपाठ : भजनसंहिता १०० : ३)

"निश्चय जानो, कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसी ने हम को बनाया, और हम उसी के हैं;

119

हम उसकी प्रजा, और उसकी चराई की भेड़ें हैं।"

भजनसंहिता १०० : ३

परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को जानता है, और उन आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता रखता है!

120

(मूलपाठ : यिर्मयाह ३२ : १७)

यिर्मयाह कहता है, "हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़े सामर्थ और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

121

तेरे लिए कोई काम कठिन नहीं है।"

122

क्या आप को यह जानकर शांति नहीं मिलती कि परमेश्वर इस विश्व में पाई जाने वाली प्रत्येक वस्तु को और आपके व्यक्तिगत जीवन को सम्भाल सकता है? कोई भी समस्या इतनी छोटी नहीं कि तारों के समूह के परमेश्वर के समक्ष लाई ना जा सके। परमेश्वर सब कुछ जानता है - यहाँ तक कि वह समय से पहले ही सब कुछ जानता है।

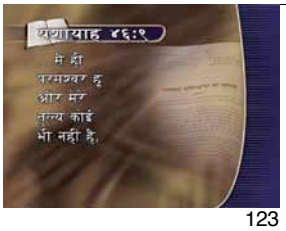

123

(मूलपाठ : यशायाह ४६ : ९)
वह कहता है, ". . . मैं ही परमेश्वर हूं और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है,

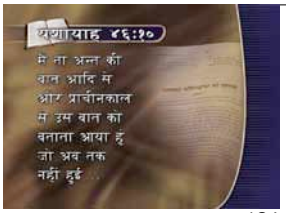

124

मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई।"
यशायाह ४६ : १०

125

कितनी शान्ति और विश्वास हम प्राप्त कर सकते हैं यह जानकर कि हमारी कोई भी समस्या परमेश्वर के लिए कठिन नहीं है। परन्तु सबसे उतम बात तो यह है कि,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

126

(मूलपाठः १ यूहन्ना ४ : ८)

"परमेश्वर प्रेम है।"

यीशु ने कहा:

127

(मूलपाठः यूहन्ना १६:२७)

"पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है . . ."

128

(दृश्य)

क्या आप को इस बात से आश्चर्य होता है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर जिसने एक विशाल, और सम्पूर्ण विश्व की सृष्टि की और उसका पालन पोषण करता है, वह आपके बारे में चिंतित होगा? परमेश्वर की असीमित शक्ति मानने से, उसकी महान बुद्धि, उसकी हर जगह उपस्थिति की क्षमता से हम विचलित हो जाते हैं। परन्तु प्रेम एक ऐसी वस्तु है जिसे हम समझ सकते हैं और पूरे विश्व में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सके।

129

(मूलपाठ : रोमियों ८ : ३८, ३९)

"क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न सामर्थ, न ऊंचाई,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

130

न कोई वर्तमान न कोई भविष्य,

131

न गहिराई और न कोई और सृष्टि,
हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकेगी

132

जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है।"
रोमियों ८ : ३८, ३९

133

परमेश्वर हमें प्यार करता है जब हम प्यार के योग्य हैं - परन्तु वह हमें तब भी प्यार करता है जब हम प्यार के योग्य नहीं होते हैं। क्या आप इसे अनुभव करते है? वह हमें प्यार करता है चाहे हम काले हों या गोरे, पुरुष हों या स्त्री, सुन्दर हों या कुरूप। उसके सदृश्य कोई भी नहीं है!

परन्तु सब से मुख्य बात यह है कि वह हमें सदा प्यार करता रहेगा!

134

(मूलपाठः यिर्मयाह ३१:३)
"हां, मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूं।"

४ - संयोग से अथवा योजना से?

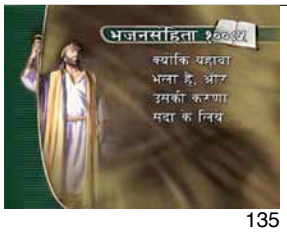

135

(मूलपाठः भजनसंहिता १००:५)

दाऊद ने लिखाः "क्योंकि यहोवा भला है, और उसकी करूणा सदा के लिये . . ."

भजनसंहिता १०० : ५

परमेश्वर हमें कभी नहीं छोड़ता है !

वह हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण में हमारे साथ है और हमें कभी नहीं छोड़ेगा !

और फिर भी यदि हमारे मस्तिष्क में उसके प्यार के विषय में कोई शंका अब भी शेष है, तो परमेश्वर इसे साधारण रूप से हमें समझाता है जिसे हम आसानी से समझ सकते हैं :

136

(मूलपाठ : यशायाह ४९:१५, १६)

"क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपिउवे बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे?

137

सचमुच वह भूल सकती हैं, परन्तु मैं तुम्हें नहीं भूल सकता।

138

देख, मैं ने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है. . ."

यशायाह ४९ : १६

४ - संयोग से अथवा योजना से?

139

परमेश्वर ने मनुष्य पर अपने प्रेम को व्यक्त करने का प्रयत्न किया, परन्तु भविष्यवक्ताओं और स्वर्गदूतों द्वारा भेजे गए वचन और संदेश पर्याप्त नहीं थे। हमें संदेश नहीं मिला।

140

इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा। यीशु अपने पिता के व्यक्तित्व और चरित्र को पूर्णरूप से प्रकाशित करता है।

141

(मूलपाठ : यूहन्ना १४:९)
उसने कहा, "जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है।"

142

यदि हम वास्तव में यह जानना चाहते हैं कि परमेश्वर कैसा है और वह हमारे बारे में क्या अनुभव करता है, तो हमें यीशु के जीवन का अध्ययन करने की आवश्यकता है। उन्होंने हमारे स्वभाव को ग्रहण किया, ताकि वे हमारी आवश्यकताओं तक पहुँच सकें। उन्होंने गरीबों को उद्धार के सुसमाचार का संदेश दिया। उन्होंने टूटे हुए दिलों को जोड़ा और अंधों को आँखें दी।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

143

उन्होंने भूखों को भोजन दिया और लोगों के साथ उनके घरों में भोजन किया।
उन्होंने उनके अपराधों को क्षमा किया और भविष्य के लिए उन्हें आशा दी।

144

उनका चेहरा सब से प्रथम चेहरा था जिसे बहुतों ने देखा। उनकी आवाज़ पहली आवाज़ थी जिसे बहुतों ने सुनी।
उन्होंने पूरे गाँवों और शहरों में, जहाँ कहीं वे गए, जीवन और खुशी को फैलाया।
उनका जीवन अपने त्याग का और दूसरों की चिन्ता करने वाला था।

145

जब हम देखते है शर्म, अपमान और तिरस्कार जो उन्होंने सहन किया, उनकी कलवरी पर मृत्यु और उनका दुख से टूटा हुआ दिल, तब हम परमेश्वर का अपने बच्चों के प्रति उसके प्रेम को समझना आरम्भ करते हैं।

146

(मूलपाठ : यूहन्ना ३:१६)
"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

147

ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

यूहन्ना ३:१६

148

इस विश्व का परमेश्वर कौन है?

वह एक शक्तिशाली सृष्टिकर्त्ता है।

वह एक अदभुत पोषक है।

वह एक अनोखा चित्रकार है।

वह एक प्रेमी पिता है।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

149

बहुत वर्षों पहले एक छोटे से लड़के की एक बहुत बुरी दुर्घटना हुई। उसे बहुत बुरी हालत में अस्पताल ले जाया गया।

उस लड़के को तुरंत रक्त चढ़ाने की आवश्यकता हुई। रक्तदान करने वाला कोई नहीं मिला। उसके पिता के पास भी उसी रक्त का प्रकार था और वह रक्त दान के लिए तैयार हो गया।

डॉक्टर ने पिता की बाजू से पुत्र को सीधे रक्त चढ़ाना शुरु कर दिया और जब उसकी बांह से एक प्लास्टिक नली द्वारा उसके पुत्र के स्थिर शरीर में सीधे रक्त प्रवाहित किया जा रहा था, तब उसने डॉक्टर की ओर देखा और आँसुओं में डूबी आवाज से कहा, " डॉक्टर यदि आपको आवश्यकता है तो मेरा सारा रक्त ले लीजिये।

डॉक्टर मैं अपने पुत्र को अपना सारा रक्त देने को तैयार हूँ।"

४ - संयोग से अथवा योजना से?

150

हमारे स्वर्गीय पिता ने अपनी बनाई हुई दुनिया को पाप में डूबा हुआ देखा।

वह समस्त जो स्वर्ग दे सकता था उसने अपने बेटे के रूप में हमें दे दिया। यीशु कहते हैं: "पिता, यदि तुझे आवश्यकता है तो यह सब ले ले। मेरे पुत्र, मेरी पुत्री, और मेरे मित्र को बचाने के लिए मेरे रक्त की एक - एक बूंद ले लो।"

151

आप कैसे इस प्रकार के प्रेम से दूर भाग सकते हैं?

एक सर्वशक्तिमान, प्यारे परमेश्वर ने आप को बनाया है। जब मनुष्य ने पाप किया, तब उसने उसके लिए अपना सब कुछ दे दिया।

आप उसके लिए बहुमूल्य हैं। वह एक अनोखे प्रेम से आप को प्यार करता है।

इस प्रकार आज जब हम अपने सिरों को प्रार्थना में झुकाते हैं, तो क्या आप अपना हाथ उपर उठाकर यह कहना चाहेंगे, "प्रभु, मैं इसी वक्त अपने दिल को तेरे प्यार के लिए खोलता हूँ।

मुझे बनाने और बचाने के लिए तेरा धन्यवाद हो, मैं इसी समय अपना जीवन तुझे देता हूँ।"